मुगलकालीन चित्रकला में धार्मिक सहिष्णुता एवं सांस्कृतिक समन्वय की अभिव्यक्ति

राम किशोर कुमावत
पी–एच.डी. (छात्र)
डॉ. श्रीकृष्ण यादव
शोध निर्देशक

सार

मुगलकालीन चित्रकला भारतीय कला इतिहास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसमें धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय तथा बहुलतावादी दृष्टिकोण का उत्कृष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है। मुगल सम्राटों, विशेषकर अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के संरक्षण में विकसित चित्रकला ने भारतीय, फारसी, मध्य एशियाई तथा स्थानीय कलात्मक परंपराओं का समन्वय स्थापित किया। इस कला में विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और सामाजिक समूहों के जीवन, आस्थाओं एवं परंपराओं को समान महत्व के साथ चित्रित किया गया। अकबर द्वारा संस्कृत ग्रंथों के फारसी अनुवाद और उनके चित्रांकन ने हिंदू–मुस्लिम सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ किया। रामायण, महाभारत, रज्मनामा तथा अन्य धार्मिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथों के चित्रों में विविध धार्मिक प्रतीकों और विचारों का समावेश धार्मिक सहिष्णुता की भावना को दर्शाता है। मुगल चित्रकला केवल शाही वैभव का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों के रचनात्मक समन्वय और सामाजिक सद्भाव की अभिव्यक्ति भी थी। प्रस्तुत अध्ययन मुगलकालीन चित्रकला में निहित धार्मिक उदारता, सांस्कृतिक आदान–प्रदान तथा समन्वयवादी प्रवृत्तियों का विश्लेषण करता है, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत की बहुलतावादी प्रकृति को समझने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं।

मुख्य शब्द : मुगलकालीन चित्रकला, धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय, अकबर, रज्मनामा, भारतीय कला, फारसी प्रभाव, हिंदू–मुस्लिम सांस्कृतिक संवाद, लघुचित्र कला

प्रस्तावना

भारतीय कला एवं संस्कृति के इतिहास में मुगलकालीन चित्रकला एक महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट अध्याय है। यह केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं रही, बल्कि उस युग की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक चेतना का भी सशक्त प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है। मुगल साम्राज्य के विभिन्न शासकों के संरक्षण में विकसित हुई यह चित्रकला भारतीय, फारसी, मध्य एशियाई तथा स्थानीय कलात्मक परंपराओं के अद्भुत समन्वय का परिणाम थी। इस कला ने न केवल राजदरबार की घटनाओं, युद्धों और शिकार दृश्यों को चित्रित किया, बल्कि धार्मिक विचारों, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को भी अभिव्यक्ति प्रदान की।

मुगलकालीन चित्रकला का विकास मुख्यतः 16वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य हुआ। इसकी नींव सम्राट हुमायूँ के समय पड़ी, जब उन्होंने फारस से प्रसिद्ध चित्रकार मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को

भारत आमंत्रित किया। अकबर के शासनकाल में इस कला का अभूतपूर्व विकास हुआ और इसे एक नई पहचान मिली। अकबर की उदार धार्मिक नीति, विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान तथा सांस्कृतिक समन्वय की भावना ने चित्रकला को भी व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया। परिणामस्वरूप चित्रों में हिंदू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध और ईसाई परंपराओं से संबंधित विषयों का समावेश दिखाई देने लगा।

धार्मिक सहिष्णुता मुगल शासन की एक प्रमुख विशेषता थी, विशेषकर अकबर, जहाँगीर और आंशिक रूप से शाहजहाँ के काल में। चित्रकारों को विभिन्न धार्मिक ग्रंथों, कथाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को चित्रित करने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। अकबर के आदेश पर महाभारत, रामायण, हरिवंश पुराण तथा अन्य संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद कराया गया और उनके चित्रांकित संस्करण तैयार किए गए। इन चित्रों में भारतीय धार्मिक मान्यताओं और कथाओं को अत्यंत सम्मानपूर्वक प्रस्तुत किया गया, जो उस समय की धार्मिक उदारता का प्रमाण है।

सांस्कृतिक समन्वय की दृष्टि से भी मुगल चित्रकला अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें फारसी चित्रण शैली की सूक्ष्मता, भारतीय रंग–योजना की जीवंतता तथा यूरोपीय चित्रकला की यथार्थवादी तकनीकों का सुंदर समागम देखने को मिलता है। मुगल चित्रशालाओं में विभिन्न धर्मों और जातियों के कलाकार एक साथ कार्य करते थे, जिससे कला में बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण विकसित हुआ। चित्रों में भारतीय परिधान, स्थापत्य, प्राकृतिक दृश्य तथा लोकजीवन के साथ–साथ फारसी और मध्य एशियाई प्रभाव भी स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

इस प्रकार मुगलकालीन चित्रकला केवल कलात्मक उत्कृष्टता का उदाहरण नहीं है, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय और सामाजिक सद्भाव की भावना की भी सशक्त अभिव्यक्ति है। यह उस युग की बहुलतावादी संस्कृति का जीवंत दस्तावेज है, जो विभिन्न परंपराओं और विचारधाराओं के शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व तथा पारस्परिक सम्मान का संदेश देता है। इसलिए मुगलकालीन चित्रकला का अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

मुगल चित्रकला का विकास

मुगल चित्रकला की नींव बाबर और हुमायूँ के समय में पड़ी। हुमायूँ जब निर्वासन के दौरान फारस गया, तब उसने वहाँ के प्रसिद्ध चित्रकार मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को अपने साथ भारत लाया। इन कलाकारों के मार्गदर्शन में मुगल चित्रकला की प्रारंभिक शैली विकसित हुई। बाद में अकबर के शासनकाल में यह कला अपने उत्कर्ष पर पहुँची।

अकबर ने विशाल चित्रशालाओं की स्थापना की, जहाँ हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के कलाकार एक साथ कार्य करते थे। परिणामस्वरूप चित्रकला में भारतीय और फारसी तत्वों का सुंदर मिश्रण विकसित हुआ। यही मिश्रण आगे चलकर सांस्कृतिक समन्वय का आधार बना।

धार्मिक सहिष्णुता की अवधारणा

धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ है विभिन्न धर्मों और आस्थाओं का सम्मान करना तथा उनके प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाना। मुगल सम्राटों में विशेष रूप से अकबर ने इस नीति को अपनाया। उसने सुलह–ए–कुल अर्थात् सर्वधर्म समभाव की नीति का प्रचार किया। इस नीति का प्रभाव कला और चित्रकला पर भी पड़ा।

मुगल चित्रकारों को विभिन्न धार्मिक विषयों पर चित्र बनाने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। परिणामस्वरूप हिंदू महाकाव्यों, पुराणों, सूफी विचारधारा तथा ईसाई धर्म से संबंधित विषयों को भी चित्रों में स्थान मिला। यह उस समय की धार्मिक सहिष्णुता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अकबरकालीन चित्रकला और धार्मिक सहिष्णुता

अकबर का शासनकाल मुगल चित्रकला का स्वर्णयुग माना जाता है। अकबर स्वयं कला प्रेमी और उदार शासक था। उसने विभिन्न धर्मों के विद्वानों को अपने दरबार में आमंत्रित किया तथा उनके विचारों का सम्मान किया।

हिंदू धार्मिक ग्रंथों का चित्रण

मुगलकालीन चित्रकला में धार्मिक सहिष्णुता का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण हिंदू धार्मिक ग्रंथों का चित्रांकन है। अकबर ने संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करवाया और उन्हें चित्रों से सजाने का कार्य भी कराया।

1. रामायण का चित्रण

अकबर के आदेश पर रामायण का फारसी अनुवाद कराया गया तथा उसके अनेक चित्र बनाए गए। इन चित्रों में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान और अन्य पात्रों को अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रित किया गया। मुस्लिम कलाकारों द्वारा हिंदू धार्मिक विषयों का चित्रण धार्मिक उदारता और सांस्कृतिक सम्मान का प्रतीक था।

2. महाभारत (रज्मनामा)

महाभारत का फारसी अनुवाद ष्रज्मनामाष् के नाम से किया गया। इसके चित्रों में कुरुक्षेत्र युद्ध, अर्जुन और कृष्ण का संवाद, भीष्म पितामह तथा अन्य प्रसंगों को चित्रित किया गया। इन चित्रों में भारतीय जीवन, वेशभूषा और धार्मिक प्रतीकों का समावेश दिखाई देता है।

3. भागवत पुराण

भागवत पुराण से संबंधित चित्रों में कृष्ण लीला, गोवर्धन धारण, रासलीला तथा अन्य धार्मिक घटनाओं को चित्रित किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि मुगल कलाकार हिंदू धार्मिक विषयों को भी समान महत्व देते थे।

विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान

मुगल चित्रकला में केवल हिंदू धर्म ही नहीं, बल्कि अन्य धार्मिक परंपराओं को भी स्थान मिला।

जैन धर्म का प्रभाव

अनेक चित्रों में जैन साधुओं और धार्मिक अनुष्ठानों का चित्रण मिलता है। जैन चित्रकला की सूक्ष्मता और रंगों का प्रभाव भी मुगल चित्रकला पर देखा जा सकता है।

ईसाई धर्म का प्रभाव

अकबर के दरबार में गोवा से आए जेसुइट मिशनरियों ने ईसाई धर्म से संबंधित चित्र और पुस्तकें प्रस्तुत कीं। इनके प्रभाव से मुगल चित्रकला में ईसा मसीह, वर्जिन मैरी तथा अन्य बाइबिल संबंधी विषयों का चित्रण किया गया।

जहाँगीर के काल में कई चित्रों में ईसाई धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग दिखाई देता है। इससे यह सिद्ध होता है कि मुगल कलाकार विभिन्न धार्मिक परंपराओं को आत्मसात करने में सक्षम थे।

सूफी और इस्लामी परंपरा

मुगल चित्रों में सूफी संतों, फकीरों तथा इस्लामी धार्मिक व्यक्तित्वों का भी चित्रण किया गया। सूफीवाद की उदार और मानवतावादी विचारधारा ने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया।

सांस्कृतिक समन्वय की अभिव्यक्ति

मुगल चित्रकला भारतीय और विदेशी कलात्मक परंपराओं के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय तत्वों का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है।

1. फारसी और भारतीय शैली का मेल

फारसी चित्रकला की विशेषता सूक्ष्म रेखांकन, सजावटी पृष्ठभूमि तथा चमकीले रंग थे। भारतीय चित्रकला में प्राकृतिकता, भावाभिव्यक्ति और स्थानीय जीवन का चित्रण प्रमुख था।

मुगल कलाकारों ने इन दोनों परंपराओं को मिलाकर एक नई शैली विकसित की। परिणामस्वरूप चित्रों में सौंदर्य, यथार्थवाद और कलात्मक संतुलन का अद्भुत मेल दिखाई देता है।

2. भारतीय कलाकारों की भूमिका

मुगल चित्रशालाओं में बड़ी संख्या में हिंदू कलाकार कार्यरत थे। बसावन, दसवंत, केशवदास, मनोहर और गोवर्धन जैसे कलाकारों ने मुगल चित्रकला को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

इन कलाकारों ने भारतीय लोकजीवन, प्राकृतिक दृश्यों तथा धार्मिक विषयों को चित्रों में स्थान देकर मुगल कला को भारतीय स्वरूप प्रदान किया।

3. यूरोपीय प्रभाव

जहाँगीर के समय यूरोपीय चित्रकला का प्रभाव बढ़ा। चित्रों में प्रकाश और छाया का प्रयोग, त्रिआयामी प्रभाव तथा यथार्थवादी चित्रण दिखाई देने लगा। यह सांस्कृतिक समन्वय का एक और उदाहरण था।

धार्मिक सहिष्णुता की अभिव्यक्ति

मुगल चित्रकला में धार्मिक सहिष्णुता का सबसे प्रभावशाली उदाहरण अकबर के शासनकाल में देखने को मिलता है। अकबर ने ष्सुलह–ए–कुलष अर्थात् ष्सर्वधर्म समभावष की नीति अपनाई थी। उसने

विभिन्न धर्मों के विद्वानों को अपने दरबार में आमंत्रित किया और उनके विचारों का सम्मान किया। इस उदार दृष्टिकोण का प्रभाव चित्रकला पर भी पड़ा।

अकबर के काल में अनेक हिंदू ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद कराया गया, जिनमें महाभारत, रामायण और अन्य धार्मिक ग्रंथ प्रमुख थे। इन ग्रंथों के चित्रित संस्करण तैयार किए गए, जिनमें हिंदू देवी–देवताओं, धार्मिक कथाओं और पौराणिक प्रसंगों को अत्यंत श्रद्धा और कलात्मकता के साथ चित्रित किया गया। यह इस बात का प्रमाण है कि मुगल दरबार केवल इस्लामी विषयों तक सीमित नहीं था, बल्कि अन्य धर्मों की परंपराओं को भी सम्मान देता था।

मुगल चित्रों में संतों, सूफियों, योगियों और धार्मिक व्यक्तियों को समान महत्व दिया गया। चित्रकारों ने हिंदू साधुओं और मुस्लिम फकीरों को एक साथ चित्रित करके धार्मिक सौहार्द का संदेश प्रस्तुत किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुगल शासक विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच संवाद और सह–अस्तित्व को बढ़ावा देना चाहते थे।

सांस्कृतिक समन्वय की अभिव्यक्ति

मुगल चित्रकला की सबसे बड़ी विशेषता इसका सांस्कृतिक समन्वय है। यह शैली फारसी चित्रकला की सूक्ष्मता, भारतीय कला की जीवंतता और स्थानीय परंपराओं की विविधता का अनूठा संगम है। प्रारंभिक मुगल चित्रकला पर फारसी प्रभाव अधिक था, क्योंकि बाबर और हुमायूँ मध्य एशिया से आए थे। हुमायूँ अपने साथ फारसी कलाकार मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को भारत लाया था, जिन्होंने मुगल चित्रकला की नींव रखी।

अकबर के समय भारतीय कलाकार बड़ी संख्या में चित्रशालाओं में कार्य करने लगे। इन कलाकारों ने भारतीय रंगों, प्रकृति, वेशभूषा और जीवन शैली को चित्रों में स्थान दिया। परिणामस्वरूप एक नई मिश्रित शैली विकसित हुई, जो न तो पूर्णतः फारसी थी और न ही पूरी तरह भारतीय, बल्कि दोनों का उत्कृष्ट समन्वय थी।

चित्रों में भारतीय स्थापत्य, वनस्पति, पशु–पक्षी तथा स्थानीय जीवन के दृश्य प्रमुखता से चित्रित किए गए। वहीं फारसी शैली की बारीक रेखाएँ, संतुलित संरचना और सजावटी तत्व भी बनाए रखे गए। इस प्रकार मुगल चित्रकला सांस्कृतिक आदान–प्रदान और समन्वय का जीवंत उदाहरण बन गई।

अकबरकालीन चित्रकला और समन्वय

अकबर का शासनकाल मुगल चित्रकला का स्वर्णिम युग माना जाता है। उसने विशाल चित्रशाला की स्थापना की, जहाँ हिंदू और मुस्लिम कलाकार मिलकर कार्य करते थे। दशवंत, बसावन, केशव, मिष्किन और फारुख बेग जैसे कलाकारों ने मिलकर अनेक उत्कृष्ट चित्रों का निर्माण किया।

"हमजानामा", "अकबरनामा", "रज्मनामा" (महाभारत का फारसी अनुवाद) और "रामायण" के चित्रित संस्करण इस सांस्कृतिक समन्वय के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। इन ग्रंथों में भारतीय धार्मिक कथाओं को मुगल

शैली में चित्रित किया गया। इससे न केवल विभिन्न संस्कृतियों का मेल हुआ, बल्कि कला के माध्यम से परस्पर समझ और सम्मान भी बढ़ा।

जहाँगीरकालीन चित्रकला और धार्मिक दृष्टिकोण

जहाँगीर कला का महान संरक्षक था। उसके काल में चित्रकला अधिक परिष्कृत और यथार्थवादी बन गई। जहाँगीर स्वयं विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के प्रति जिज्ञासु था। उसने ईसाई मिशनरियों से संपर्क रखा और यूरोपीय चित्रकला की तकनीकों को भी अपनाया।

जहाँगीरकालीन चित्रों में ईसाई धार्मिक प्रतीकों, स्वर्गदूतों और पवित्र व्यक्तियों के चित्र भी दिखाई देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि मुगल दरबार विभिन्न धार्मिक परंपराओं के प्रति खुला दृष्टिकोण रखता था। चित्रकारों ने भारतीय, इस्लामी और यूरोपीय तत्वों को एक साथ प्रस्तुत करके सांस्कृतिक समन्वय को और अधिक सशक्त बनाया।

शाहजहाँकालीन चित्रकला

शाहजहाँ के समय चित्रकला में वैभव, सौंदर्य और शिष्टता का विकास हुआ। यद्यपि इस काल में धार्मिक विषय अपेक्षाकृत कम दिखाई देते हैं, फिर भी सांस्कृतिक समन्वय की परंपरा जारी रही। दरबारी जीवन, उत्सव, संगीत, नृत्य और सामाजिक गतिविधियों के चित्र विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं के मेल को दर्शाते हैं।

शाहजहाँकालीन चित्रों में भारतीय परिधान, फारसी अलंकरण और मध्य एशियाई प्रभाव एक साथ दिखाई देते हैं। यह उस समय के बहुसांस्कृतिक समाज का कलात्मक प्रतिबिंब था।

चित्रकारों की भूमिका

मुगल चित्रकला में कार्य करने वाले कलाकार विभिन्न धर्मों और समुदायों से आते थे। हिंदू और मुस्लिम कलाकारों ने मिलकर अनेक चित्रों का निर्माण किया। एक ही चित्र में कई कलाकारों का योगदान होता था, जिससे सहयोग और सामूहिक सृजन की भावना विकसित हुई।

यह तथ्य स्वयं धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय का प्रमाण है। कलाकारों ने अपनी व्यक्तिगत धार्मिक पहचान से ऊपर उठकर कला को प्राथमिकता दी और ऐसी कृतियों का निर्माण किया जो सभी समुदायों के लिए प्रेरणास्रोत बनीं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

मुगल चित्रकला ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चित्रों के माध्यम से विभिन्न धर्मों, भाषाओं और परंपराओं के लोग एक–दूसरे की संस्कृति से परिचित हुए। इससे सामाजिक सौहार्द और पारस्परिक सम्मान की भावना को बल मिला।

मुगल चित्रकला ने आगे चलकर राजस्थानी, पहाड़ी और दक्कनी चित्रकला शैलियों को भी प्रभावित किया। इन शैलियों में भी धार्मिक और सांस्कृतिक समन्वय की परंपरा विकसित हुई, जो भारतीय कला की समावेशी प्रकृति को दर्शाती है।

निष्कर्ष

मुगलकालीन चित्रकला भारतीय इतिहास में धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इस कला ने विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और परंपराओं के बीच संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अकबर की उदार नीतियाँ, जहाँगीर की व्यापक दृष्टि तथा मुगल दरबार में हिंदू–मुस्लिम कलाकारों का सहयोग इस समन्वय की आधारशिला बने।

मुगल चित्रकला में हिंदू महाकाव्यों, इस्लामी परंपराओं, सूफी विचारधारा तथा ईसाई प्रभावों का समावेश यह सिद्ध करता है कि कला संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर मानवता और सौहार्द का संदेश देती है। इस चित्रकला ने भारतीय संस्कृति की बहुलतावादी प्रकृति को सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया और एक ऐसी समन्वित कला शैली का निर्माण किया जो आज भी विश्वभर में प्रशंसा का विषय है।

अतः कहा जा सकता है कि मुगलकालीन चित्रकला केवल सौंदर्य और कौशल की अभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक एकता और भारतीय सभ्यता की समन्वयवादी परंपरा का जीवंत प्रतीक भी थी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. आधुनिक चित्रकला, प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल, साहित्य संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006।
2. अग्रवाल डॉ. गिर्राज किशोर – जापान की चित्रकला– देव ऋषि प्रकाशन, अलीगढ़।
3. अशोक – जापान की चित्रकला– ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़।
4. अग्रवाल जी.के. – कला समीक्षा–ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़।
5. अग्रवाल डॉ. गिर्राज किशोर – भारतीय चित्रकला का आलोचनात्मक इतिहास कला और कलम– अशोक प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़– 2012 ।
6. अग्रवाल, आर. ए. : कला विलास–भारतीय चित्रकला का विकास, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1984।
7. अग्रवाल, आर. ए. और शर्मा, एस. के. : रूपप्रद कला के मूलाधार, लायक बुक डिपो, मेरठ, 2000 ।
8. अग्रवाल, आर. ए. एवं चोयल, पी.एन. : चित्र संयोजना, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1981।
9. अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम, अशोक प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, 1980।
10. अग्रवाल, श्याम बिहारी : रूप शिल्प, इलाहाबाद, 1986।
11. अशोक–कला निबन्ध – संजय पब्लिकेशन शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, आगरा– 2012।
12. आर्य, विनोद कुमार : भारतीय कला की कहानी, अंकुर बुक डिपो, अजमेर, 2001 ।